तुरही

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

ISBN : 978-93-5000543-9
मूल्य : ₹ 60
लेखक : मिख़ाईल प्ल्यात्स्कोवस्की
अनुवादक : मदनलाल 'मधु'
संस्करण : 2011

Turhi

बिल्ला कैसे चकमे में आया

एक बिल्ला बड़े मज़े से झील के पास से गुज़र रहा था। उसने किनारे के नज़दीक ही एक बगुले को पानी में जाते देखा। वह सिर झुकाता, अपनी लम्बी चोंच को पानी में इधर-उधर घुमाता और रुपहली मछली निकाल लेता।

बिल्ले को ईर्ष्या हुई। वह बगुले के नज़दीक जाकर बोला-

"ख़ूब कमाल करते हो तुम तो, बगुले। पानी में चोंच डालते ही मछली पकड़ लेते हो!"

"यह कोई मुश्किल काम नहीं है," बगुले ने जवाब दिया। "चाहो तो तुम्हें भी सिखा सकता हूँ।"

"म्याऊँ-म्याऊँ! बेशक चाहता हूँ!" बिल्ले ने ख़ुशी से म्याऊँ-म्याऊँ की।

"ख़ूब मछलियाँ पकड़ने के लिए एक राज़ जानना जरूरी है।"

"क्या राज़ है वह?"

"देखते हो न कि मैं पानी में एक टाँग पर खड़ा रहता हूँ?"

"हाँ, देख रहा हूँ।"

"यही मेरा राज़ है। बात यह है कि मछलियों को जिज्ञासा होती है कि मैं गिरूँगा कि नहीं। इसलिए वे ख़ुद ही मेरे पास आ जाती हैं और मैं उन्हें फौरन झपट लेता हूँ..."

"भई वाह!" बिल्ले ने हैरानी से कहा। "अब मैं भी मछलियाँ पकड़ने की कोशिश करता हूँ।"

"हाँ, हाँ, कोशिश करो," बगुले ने उसे उकसाया।

बिल्ला सावधानी से पानी में गया और अपने तीन पंजे ऊपर उठाने लगा। बहुत कोशिश करने पर भी उसे कामयाबी नहीं मिली। एक पंजे पर खड़े होना कुछ आसान नहीं था। एक तार तो वह ऐसे ज़ोर से उछला कि अपने को सम्भाल न पाया और कलाबाज़ी खाता हुआ झील में जा गिरा। पानी से तर-ब-तर बिल्ला बाहर आया, वह डर के मारे काँप रहा था और उसके दाँत बज रहे थे।

"अरे, तुम तो एक टाँग पर खड़े ही नहीं हो सकते! तुम बढ़िया मछुआ नहीं बन सकोगे!" बगुला हँसा और सरकंडों में भाग गया।

बिल्ला नाक-भौंह सिकोड़े और गुस्से से भुनभुनाता हुआ घर को चल दिया, क्योंकि न सिर्फ एक भी मछली नहीं पकड़ पाया था, बल्कि ख़ुद भी चालाक बगुले के चकमे में आ गया था।

नदी गहरी या छिछली

एक बछड़े और सूअर के बच्चे में बहुत पक्की दोस्ती थी। ऐसे दोस्त थे कि दो तन एक जान। जिधर एक जाता, दूसरा भी उधर ही चल पड़ता।

बछड़ा बाड़ के पीछे खेत में भाग जाता, तो सूअर का बच्चा भी हुंकार भरकर उससे होड़ करने लगता। सूअर का बच्चा टीले से गड्ढे में भाग जाता, तो पतली-पतली टाँगोंवाला बछड़ा भी छलाँगें मारता हुआ वहीं जा पहुँचता।

उन दोनों को ठीक ही कभी न अलग होनेवाले दोस्त कहा जाता था।

एक दिन बछड़ा और सूअर का बच्चा चरागाह में उछल-कूद रहे थे। उन्हें पता भी नहीं चला कि नदी किनारे जा निकले।

"आओ, उस पार चलें," बछड़े ने कहा।

"चलो," दोस्त फ़ौरन तैयार हो गया।

बछड़ा पानी में गया, नदी के बीच तक जा पहुँचा और पानी उसके घुटनों से जभरा-जभरा ऊपर पहुँच गया।

"डरो नहीं, चले आओ!" उसने चिल्लाकर दोस्त से कहा। "यहाँ बहुत कम पानी है!"

सूअर का बच्चा बड़ी दिलेरी से अपने दोस्त के पीछे-पीछे चल दिया। मझधार में पहुँचकर डूबने लगा।

"बचाओ! मदद करो! बचाओ!"

बछड़ा मदद को लपका और दोस्त को नदी से बाहर आने में उसने सहायता दी। सूअर का बच्चा आग-बबूला हो उठा-

"तुमने मुझे धोखा क्यों दिया कि नदी छिछली है?"

"मैंने धोखा नहीं दिया!" बछड़े ने कहा।

"मगर नदी तो गहरी है!"

"नहीं, छिछली है!"

"नहीं, गहरी है!"

"नहीं, छि-छ-ली है!"

बछड़ा और सूअर का बच्चा देर तक झगड़ते रहे और इसके बाद एक दूसरे से रूठ गये। बेकार ही रूठे वे। दोनों ही अपने-अपने ढंग से सही थे।

तुरही

ज़ोर-ज़ोर से बजनेवाली तुरही मैंने आप बनाई,
जो भी चाहूँ, वह ही गाये, इसमें सब कुछ पड़े सुनाई।
अगर कहो तो इस तुरही पर, तुम्हें हवा का गीत
सुनाऊँ,
कैसे कल-छल नदिया बहती, चाहो तो मैं यही बजाऊँ।
अगर कहो तो छेड़ूँ इस पर, मैं बुलबुल के मधुर
तराने,
मेरी तुरही सब कुछ गाये, मेरी तुरही सब कुछ जाने।

जिसको चाहूँ, उसे नचा दूँ
चरागाह में रंग जमा दूँ!

तुरही बजे, तितलियाँ नाचें, नाचें सारे व्याध-पतंग,
तुरही बजे, बकरियाँ नाचें, रह जाये नानी भी दंग।

सुनें बबूने, गुबरैले भी
झींगुर सुनते, सुनती गायें,
मेरी प्यारी तुरही सुनकर
सब के सब मस्ती में आयें!
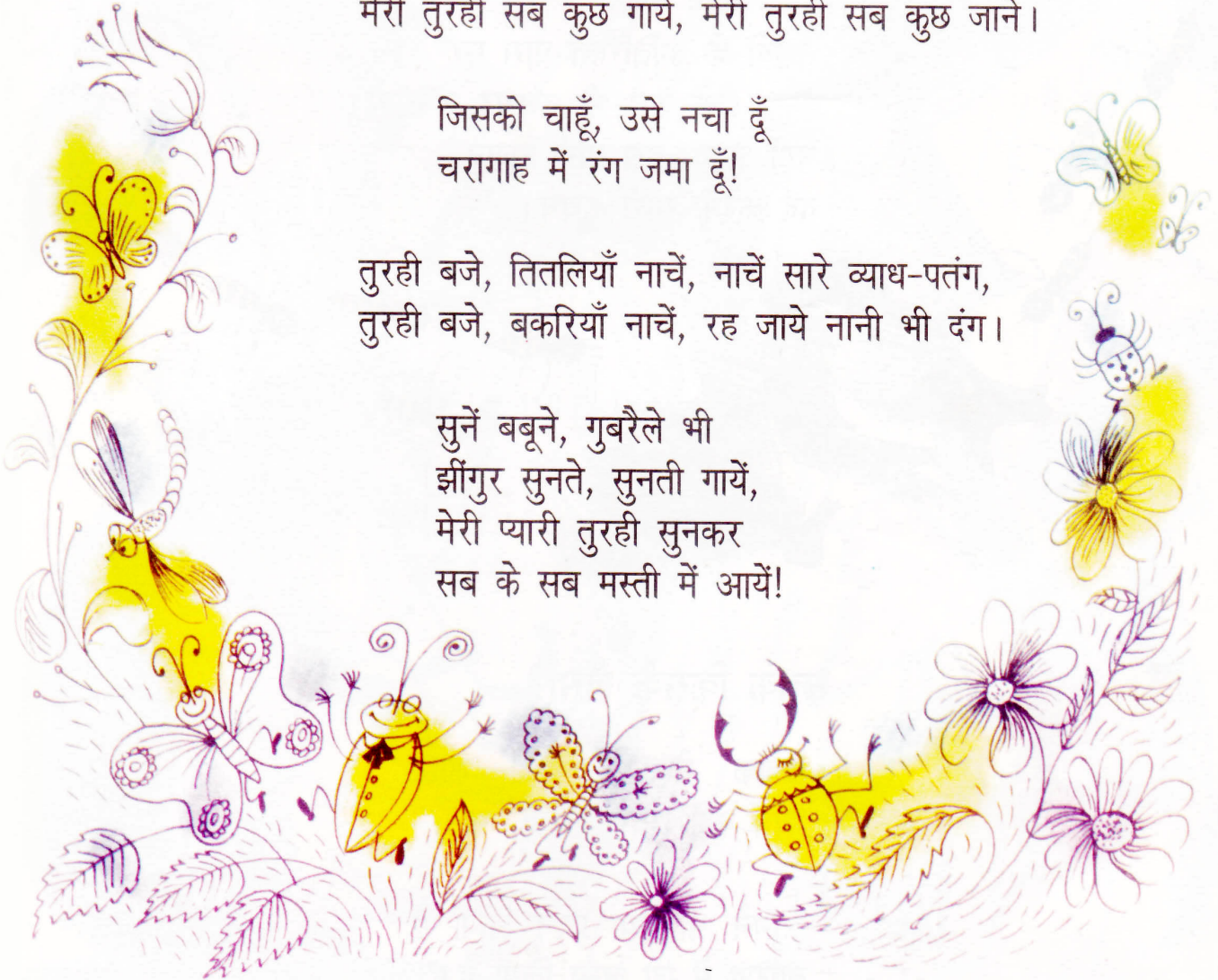
शहद

भालू का पीछा करती थीं, मधुमक्खियाँ
शोर मचाये
"शहद चुराने आते हो तुम, शर्म न तुम
को कुछ भी आये!
नहीं शहद को हाथ लगाओ
अपनी राह नापते जाओ!"
ताबड़तोड़ भागता जाये, भालू अपनी
जान बचाये
तलवों के अतिरिक्त घास पर
जैसे कुछ भी नजभर न आये।
नहीं शहद, बस होगी सूजन
दर्द करेगी सारी थूथन।
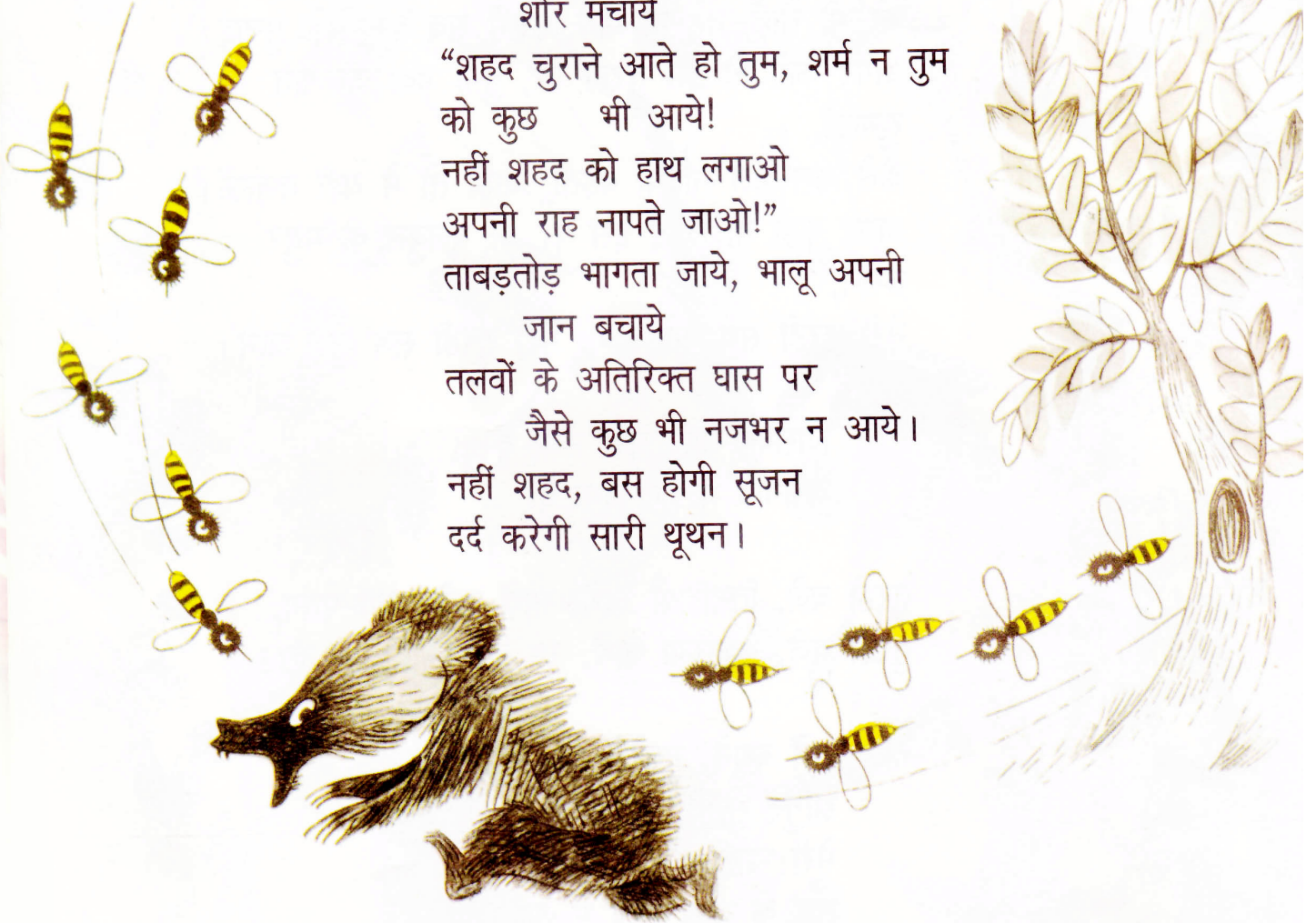
छत्रक किसके जैसा?

छत्राक से यों बोली साही
"तुम क्यों छतरी से हो, भाई?"

"तुमने भी क्या प्रश्न किया है
बारिश में जो जन्म लिया है।"

कबूतर

सफ़ेद कबूतर
तड़के उड़कर
गये, जहाँ था गढ़ा बर्फ़ में।
प्यास बुझाने, पानी पीकर।
एक बूँद से प्यास बुझाते
ठण्ड न खायें, ख़ैर मनाते!

अलार्म घड़ी

चोंच हिलाता, पूँछ हिलाता,
इधर-उधर खिड़की के नीचे,
आता-जाता,
खुद छोटा-सा, बड़ी एड़ियाँ
सिर पर कलगी को लहराता
वह अलार्म बढ़िया कहलाता।
यह अलार्म आँगन में रहता
सबको तड़के, सुबह जगाता
फीका पड़ जाता अलार्म भी,
"कुकड़ूँ-कूं" जब वह चिल्लाता!

मैं बादल पर उड़ा

आसमान में उड़ा देर तक, उजले-उजले बादल पर
पृष्ठ हँसी वाली पुस्तक के, हवा पलटती थी सरसर।

उड़ा-उड़ा मैं बहुत देर तक, उजले बादल के ऊपर
सभी अबाबीलों को मैंने आइसक्रीम दी जी भर कर।

उड़ा-उड़ा मैं बहुत देर तक, उजले-उजले बादल पर
छेद सिये सारे बादल के, मैंने तो सूई लेकर।
किन्तु दुःखी न होना तुम सब, डाह नहीं मुझ से करना
सत्य नहीं है इसमें कुछ भी यह तो था केवल सपना।